संत रैदास के पद

पद

- **पद** काव्य रचना की गाई जाने वाली शैली है। इसका विकास लोक गीतों की परंपरा से माना जाता है। यह मात्रिक छन्द की श्रेणी में आता है। प्राय: पदों के साथ किसी न किसी राग का निर्देश मिलता है। पद विशेष को सम्बन्धित राग में ही गाया जाता है।यह पद्य विधा भक्तिकालीन युग का प्राण है ! भक्तिकालीन युग में पूर्णतः सभी कवियों (भक्तिमार्ग अनुयायी / सूफी परंपरा) इत्यादि ने इसी विधा में अपनी रचनाएँ की है !
- यह विधा मुख्यतः भगवान् से विनय करने हेतु , प्रेम हेतु , माधुर्य , विरह , करुण रस , और उपदेश जैसी अवस्थाओं को निसृत करने हेतु ही होती है ! यह एक ऐसी विधा है जिसमें काव्य, संगीत के माध्यम से स्वतः ह्रदय से निकलता है ! इसे ध्रुपद गायन भी कहते थे !
  मीराबाई , सूरदास , तुकाराम , कबीरदास इत्यादि कभी कलम इत्यादि लेकर नहीं बैठते थे ! भगवदप्रेम में व्याकुल इन प्रेमियों के ह्रदय से स्वयं ही अविरल काव्य धारा फूट पड़ती थी जिसे उनके सहचर लिपिबद्ध करते थे

भक्त रैदास के पदों का गायन

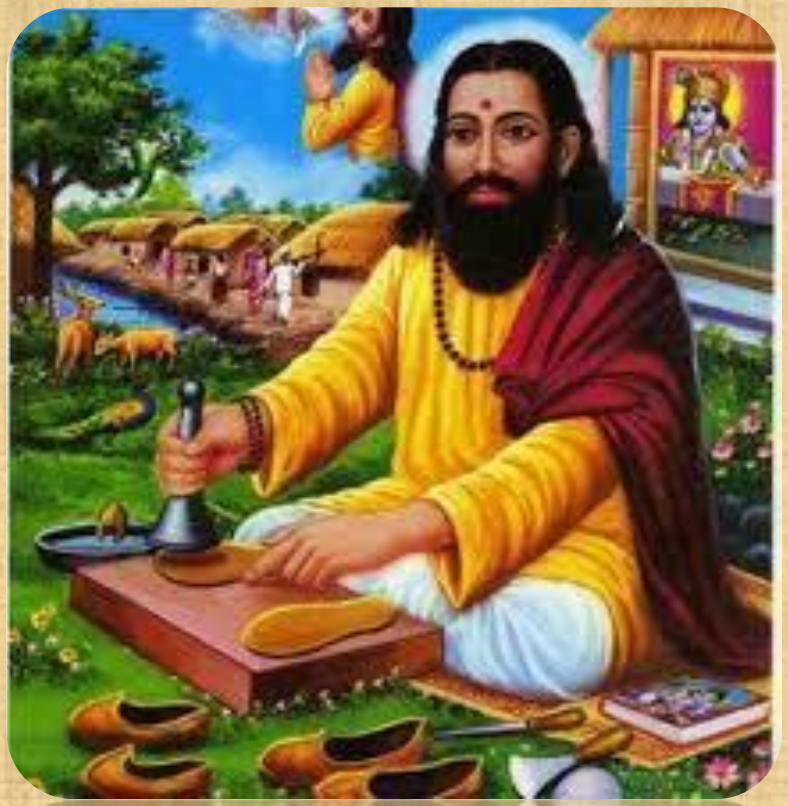

पाठ्यक्रम में दिए गए भजनों के गायन का रसास्वादन करने के लिए निम्नलिखित लिंक्स पर जाएँ -
कैसे छूटे नाम रट लागी
भजन गायन : https://www.youtube.com/watch?v=OnVqqxL44aw
ऐसी लाल तुझ बिन
भजन गायन : https://www.youtube.com/watch?v=2KtdbTYUIfw

संत कवि रैदास का जीवन परिचय

- **संत रैदास (१४३३, माघ पूर्णिमा)**
- संत कुलभूषण कवि **रैदास** उन महान् सन्तों में अग्रणी थे जिन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज में व्याप्त बुराइयों को दूर करने में महत्वपूर्ण योगदान किया। इनकी रचनाओं की विशेषता लोक-वाणी का अद्भुत प्रयोग रही है जिससे जनमानस पर इनका अमिट प्रभाव पड़ता है। मधुर एवं सहज संत रैदास की वाणी ज्ञानाश्रयी होते हुए भी ज्ञानाश्रयी एवं प्रेमाश्रयी शाखाओं के मध्य सेतु की तरह हैं।
- https://www.youtube.com/watch?v=CudxmydTYOw
- इस लिंक पर जाकर आप संत कवि रैदास के जीवन व उनसे जुडी घटनाओं को चलचित्र रूप में देख सकते हैं|

जन्म

माघ पूर्णिमा संवत 1388

जन्म स्थान : काशी

व्यवसाय : चर्मकार (जूते बनाने का काम)

रैदास के शिष्य/भक्त मीरा बाई,*सिकंदर लोधी,* राजा पीपा,* राजा नागरमल

रैदास के गुरु : स्वामी रामानंद

संत कबीर के समकालीन

मृत्यु संवत : 1518 (१३० वर्ष की आयु में)

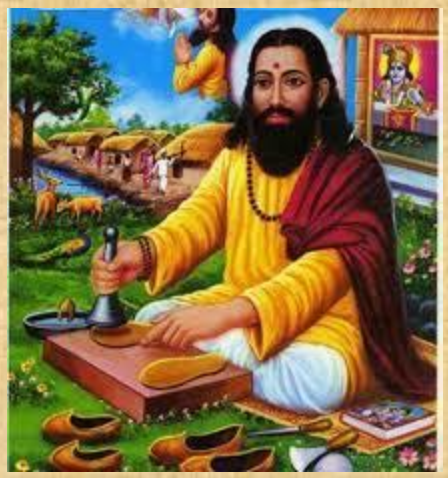

अनपढ़ परन्तु साधु-सन्तों की संगति से पर्याप्त व्यावहारिक ज्ञान

ऊँच-नीच की भावना तथा ईश्वर-भक्ति के नाम पर किये जाने वाले विवाद को सारहीन तथा निरर्थकता

संत-साहित्य के ग्रंथों और गुरु-ग्रंथ साहब में इनके पद पाए जाते हैं।

भक्तिकाल के निर्गुण भक्ति शाखा के कवि

ज्ञानाश्रयी होते हुए भी ज्ञानाश्रयी एवं प्रेमाश्रयी शाखाओं के मध्य सेतु की तरह

कवि रैदास की भक्ति भावना

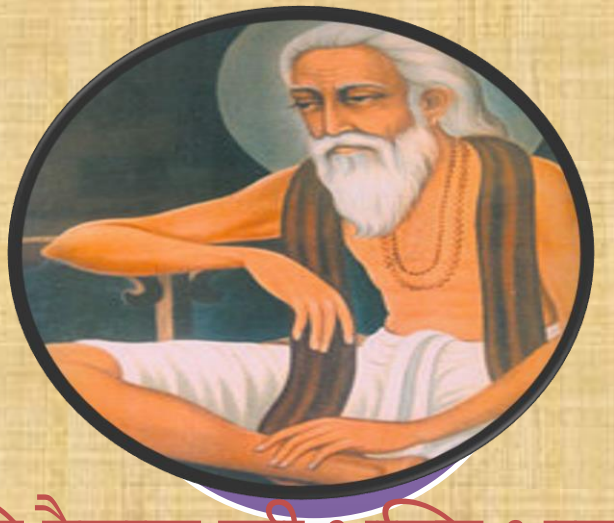

- एकनिष्ठता
- अनन्य भक्ति भाव
- दैन्य भाव
- आत्मनिवेदन
- दास्य भाव
- सहज भक्ति

प्रथम पद

- अब कैसे छूटै राम नाम रट लागी ।
  प्रभु जी, तुम चंदन हम पानी , जाकी अँग-अँग बास समानी ।
  प्रभु जी, तुम घन बन हम मोरा , जैसे चितवत चंद चकोरा ।
  प्रभु जी, तुम दीपक हम बाती , जाकी जोति बरै दिन राती ।
  प्रभु जी, तुम मोती हम धागा , जैसे सोनहिं मिलत सुहागा ।
  प्रभु जी, तुम तुम स्वामी हम दासा , ऐसी भक्ति करै रैदासा ।

पद का मूल भाव : प्रस्तुत पद में कवि रैदास कहते हैं कि जिसके मन में भी ईश्वर के प्रति प्रेम और भक्ति की लगन लग जाए तो फिर वह नहीं छूटती| रैदास भक्त और भगवान का सम्बन्ध बताते हुए कहते हैं कि ईश्वर हर हाल, हर काल में सर्वश्रेष्ठ है और उनकी भक्ति तथा संपर्क में आने से भक्त में भी उनके गुण समाहित होने लगते हैं|इसके अलावा उसने चंदन – पानी, दीपक – बाती आदि अनेक उदाहरणों द्वारा उनका सान्निध्य पाने तथा अपने स्वामी के प्रति दास्य भक्ति की स्वीकारोक्ति की है।

अब कैसे छूटै राम नाम रट लागी ।

प्रस्तुत पद में कवि रैदास कहते हैं कि जिसके मन में भी ईश्वर के प्रति प्रेम और भक्ति की लगन लग जाए तो फिर वह नहीं छूटती|अर्थात जी मनुष्य के मन में ईश्वर के प्रति प्रेम उत्पन्न हो जाए तो वह सांसारिक बंधनों में नहीं बँधता| वह सब कुछ भूल कर ईश्वर का ही नाम रटता रहता है|

प्रभु जी, तुम चंदन हम पानी , जाकी अँग-अँग बास समानी ।

| रैदास भक्त और भगवान का सम्बन्ध बताते हुए कहते हैं कि ईश्वर हर हाल, हर काल में सर्वश्रेष्ठ है और उनकी भक्ति तथा संपर्क में आने से भक्त में भी उनके गुण समाहित होने लगते हैं| यदि प्रभु चन्दन के समान हैं तो भक्त को पानी के समान| जिस प्रकार चन्दन के संपर्क में आने से पानी में चन्दन के गुण समा जाते हैं उसी प्रकार ईश्वर की भक्ति से भक्त का हृदय ईश-प्रेम की सुगंध से परिपूर्ण हो जाता है|जिस

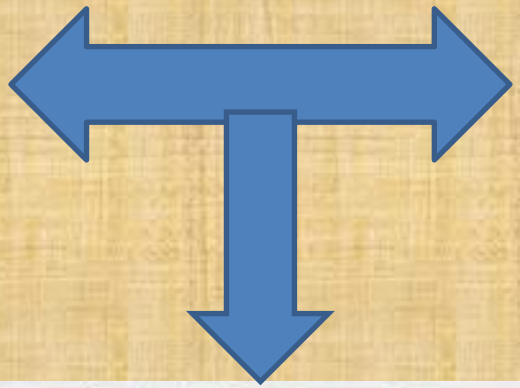

प्रभु जी, तुम घन बन हम मोरा

कवि कहते हैं कि ईश्वर काले बादलों के समान हैं और भक्त मोर के सामान | जिस प्रकार बादलों को देख मयूर नृत्य करने लगता है उसी प्रकार अपने हृदय में ईश्वर के दर्शन कर भक्त का मन प्रसन्नता से नाच उठता है|

जैसे चितवत चंद चकोरा।

ईश्वर

रैदास जी ईश्वर को चाँद और भक्त को चकोर पक्षी मानते हुए कहते हैं कि जैसे चकोर चाँद के प्रेमाकर्षण में बांध कर उसे प्रेम पूर्वक निहारता रहता है उसी प्रेम भाव से भक्त भी ईश्वर को निहार कर आनंदित चंद्रमा और चकोर के प्रेम की भांति भक्त भी सदैव अपने हृदय में ईश्वर के दर्शन पाना चाहता है|

भक्त

प्रभु जी, तुम दीपक हम बाती ,
जाकी जोति बरै दिन राती ।

रैदास जी ईश्वर को दीपक तथा भक्त को उसमें जलने वाली बत्ती के सामान बताते हुए कहते हैं कि ईश्वर व भक्त के बीच दिए और बत्ती के समान सम्बन्ध है| भक्त का मन सदा प्रभु भक्ति की ज्योति से प्रकाशित रहता है|

प्रभु जी, तुम मोती, हम धागा

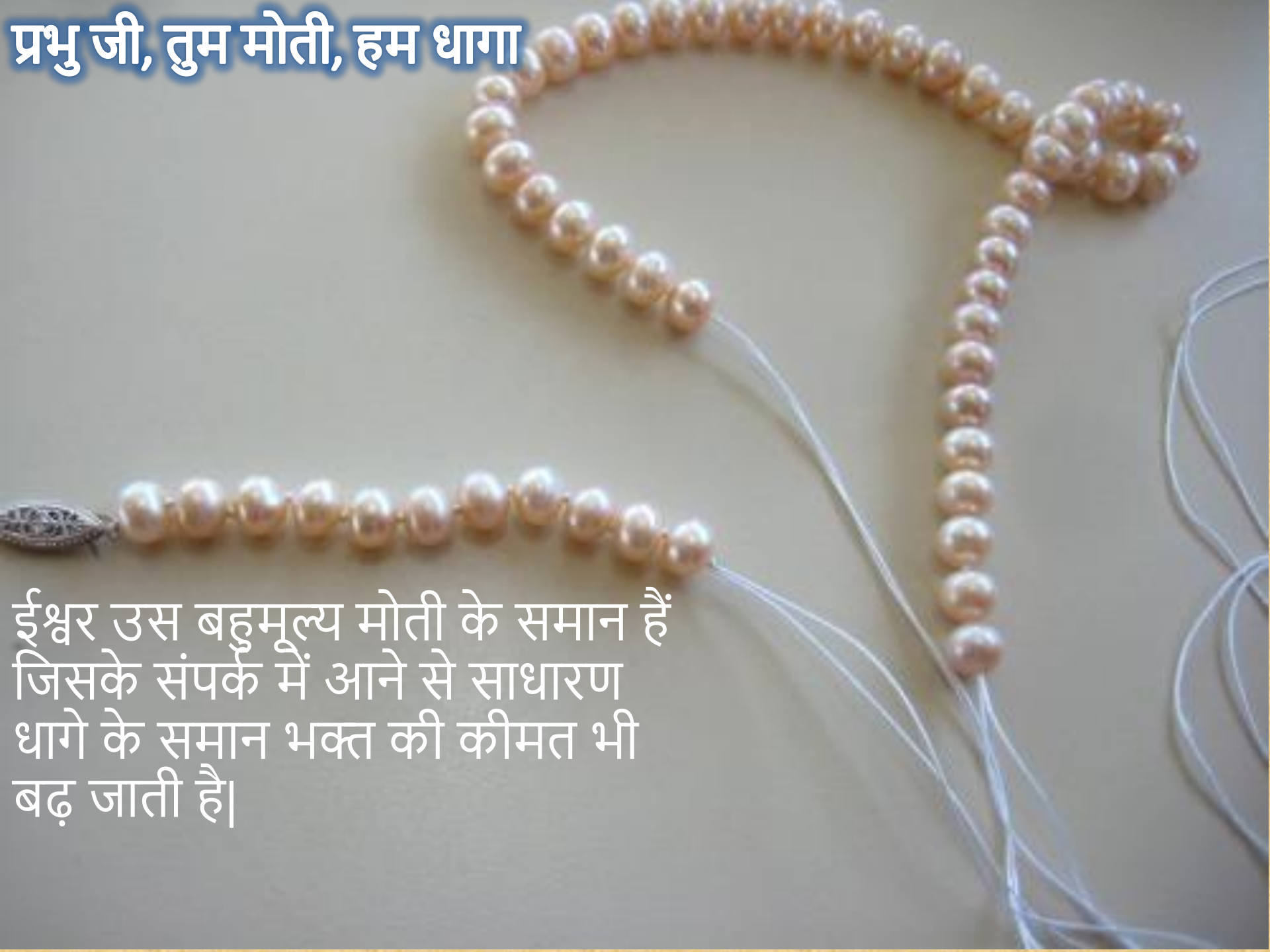

ईश्वर उस बहुमूल्य मोती के समान हैं जिसके संपर्क में आने से साधारण धागे के समान भक्त की कीमत भी बढ़ जाती है|

जैसे सोनहिं मिलत सुहागा॥

जैसे सुहागे के संपर्क से सोना खरा हो जाता है, उसी तरह भक्त भी ईश्वर के संपर्क से शुद्ध व पवित्र हो जाता है।

सोने पर सुहागा

सोने पर सुहागे का प्रभाव जानने के लिए इस लिंक पर (11:18 पर) क्लिक करें

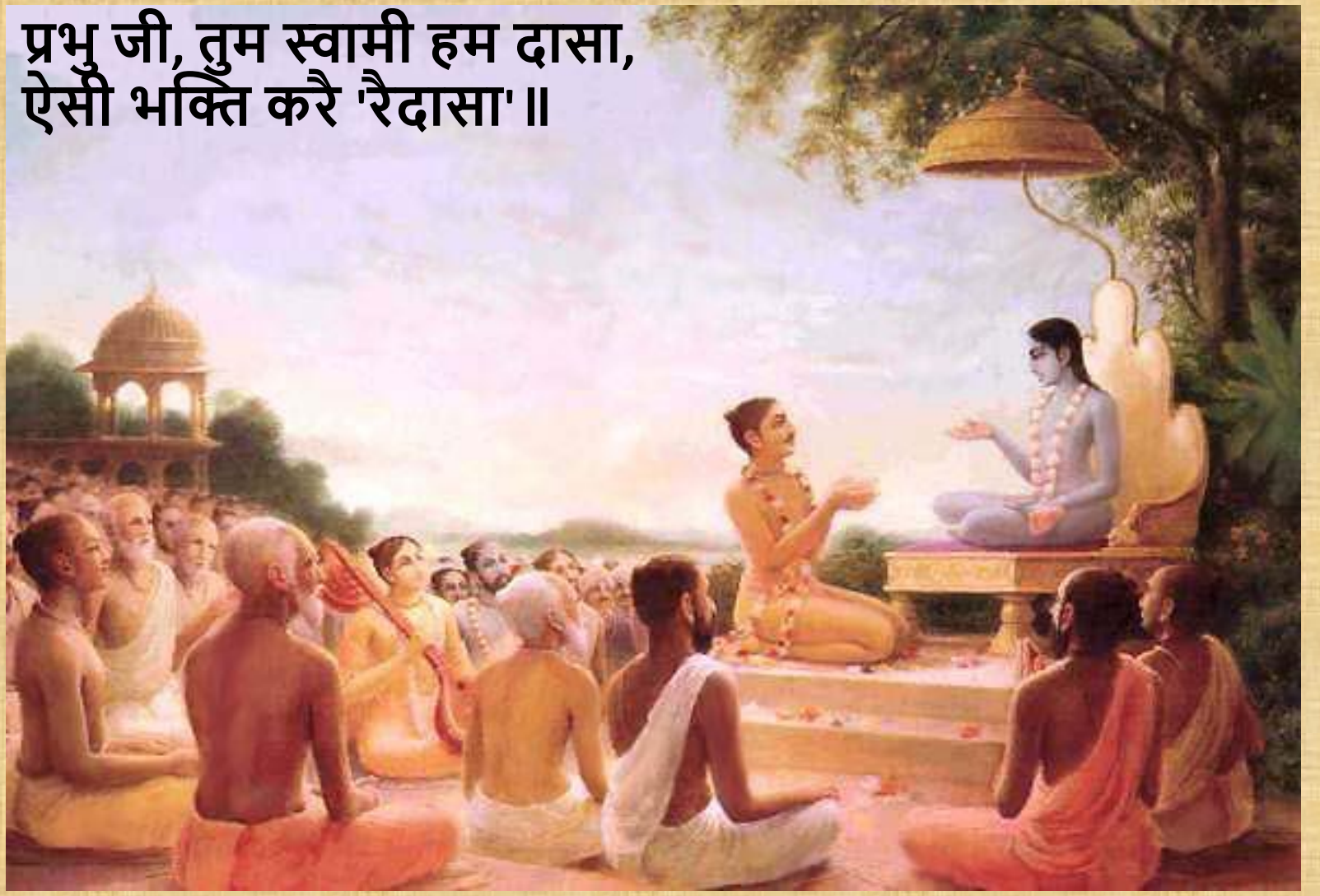

रैदास कवि ईश्वर की ऐसी भक्ति करना चाहते हैं जिसमें ईश्वर उनके स्वामी हों तथा वे ईश्वर के दास बन कर रहें।

कठिन शब्दों के अर्थ

- अब कैसे छूटै (छूट सकती है) राम नाम रट (रटना/ बार-बार दोहराना) लागी ।
  प्रभु जी, तुम चंदन हम पानी , जाकी (जिसकी) अँग-अँग (प्रत्येक अंग में) बास (सुगंध/ खुशबू) समानी (समा गई है) ।
  प्रभु जी, तुम घन (बादल) बन हम मोरा (मोर) , जैसे चितवत (प्रेम पूर्वक देखना/ निहारना) चंद (चाँद) चकोरा (चकोर नमक पक्षी) ।
  प्रभु जी, तुम दीपक हम बाती (बत्ती) , जाकी (जिसकी)जोति (ज्योति) बरै (जलती रहती है) दिन राती (रात/ रात्रि) ।
  प्रभु जी, तुम मोती हम धागा , जैसे सोनहिं (सोने में) मिलत (मिल जाता है) सुहागा (Borax (सोडियम टेट्राबोरेट) ।
  प्रभु जी, तुम तुम स्वामी (मालिक) हम दासा (सेवक) , ऐसी भक्ति करै रैदासा ।

प्रतिपाद्य

पद में कवि रैदास कहते हैं कि जिसके मन में भी ईश्वर के प्रति प्रेम और भक्ति की लगन लग जाए तो फिर वह नहीं छूटती| रैदास भक्त और भगवान का सम्बन्ध बताते हुए कहते हैं कि ईश्वर हर हाल, हर काल में सर्वश्रेष्ठ है और उनकी भक्ति तथा संपर्क में आने से भक्त में भी उनके गुण समाहित होने लगते हैं| यदि प्रभु चन्दन के समान हैं तो भक्त पानी के समान| जिस प्रकार चन्दन के संपर्क में आने से पानी में चन्दन के गुण समा जाते हैं उसी प्रकार ईश्वर की भक्ति से भक्त का हृदय ईश-प्रेम की सुगंध से परिपूर्ण हो जाता है|जिस प्रकार बादलों को देख मयूर नृत्य करने लगता है उसी प्रकार ईश्वर के दर्शन कर भक्त का मन प्रसन्नता से नाच उठता है| चंद्रमा और चकोर के प्रेम की भांति भक्त भी सदैव अपने हृदय में ईश्वर के दर्शन पाना चाहता है| ईश्वर व भक्त के बीच दिए और बत्ती के समान सम्बन्ध है| भक्त का मन सदा प्रभु भक्ति की ज्योति से प्रकाशित रहता है| ईश्वर उस बहुमूल्य मोती के समान हैं जिसके संपर्क में आने से साधारण धागे के समान भक्त की कीमत भी बढ़ जाती है| जैसे सुहागे के संपर्क से सोना खरा हो जाता है, उसी तरह भक्त भी ईश्वर के संपर्क से शुद्ध व पवित्र हो जाता है। रैदास कवि ईश्वर की ऐसी भक्ति करना चाहते हैं जिसमें ईश्वर उनके स्वामी हों तथा वे ईश्वर के दास बन कर रहें।

द्वितीय पद

ऐसी लाल तुझ बिनु कउनु करै ।
गरीब निवाजु गुसाईआ मेरा माथै छत्रु धरै ॥
जाकी छोति जगत कउ लागै ता पर तुहीं ढरै ।
नीचउ ऊच करै मेरा गोबिंदु काहू ते न डरै ॥
नामदेव कबीरू तिलोचनु सधना सैनु तरै ।
कहि रविदासु सुनहु रे संतहु हरिजीउ ते सभै सरै ॥

पद गायन :https://www.youtube.com/watch?v=YG3jj6_rpVc

- केन्द्रीय भाव (मूलभाव)
- प्रस्तुत पद में ईश्वर के कृपालु तथा समदर्शी स्वभाव का वर्णन करते हुए ईश्वर को सर्व सामर्थ्यवान बताया है| रैदास जी कहते हैं जात-पात, ऊंच-नीच आदि भेदभाव मनुष्य द्वारा बनाये गए हैं| ईश्वर की दृष्टि में सब समान हैं| ईश्वर अपने निम्न कुल में जन्में भक्तों पर भी प्रेमभाव रखते हैं तथा उन्हें समाज में सम्मानित स्थान प्रदान करते हैं| ईश्वर के लिए कुछ भी असंभव नहीं हैं|
-

ऐसी लाल तुझ बिनु कउनु करै ।

इस पंक्ति में कवि प्रेम भाव से ईश्वर को लाल संबोधन से पुकारते हुए कहते हैं कि हे ईश्वर! आप सर्व सामर्थ्यवान हैं| आपके लिए लिए इस संसार में कुछ भी असंभव नहीं है| भला आपके अतिरिक्त इस संसार में ऐसा कृत्य (गरीबों को सम्मान दिलाने का) कौन कर सकता है?

गरीब निवाजु गुसाईआ मेरा माथै छत्रु धरै ॥

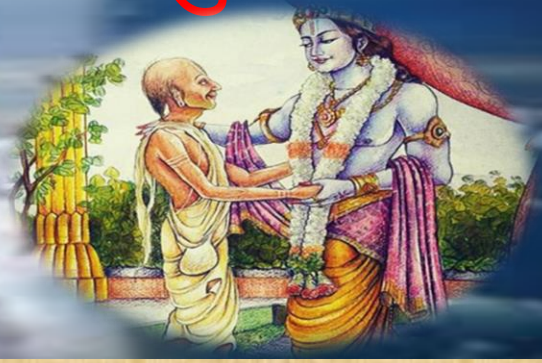

- रैदास कवि ईश्वर को गरीब नवाज़ कह कर पुकारते हैं|अर्थात भगवान गरीब तथा दीन– दुखियों पर दया करने वाले हैं|

- प्रभु ही ऐसे कृपालु स्वामी हैं जो अपने निम्न कुल में जन्में भक्तों के माथे पर राजाओं जैसा छत्र रख देते हैं अर्थात सम्मान व गौरव दिलवाते हैं|

जाकी छोति जगत् कउ लागै, ता पर तुहीं ढरै ।

- सारा संसार जिन्हें अस्पृश्य (अछूत) मान कर उनके प्रति भेद-भाव पूर्ण व्यवहार करता है तुम उन पर अपना प्रेम उड़ेल देते हो|

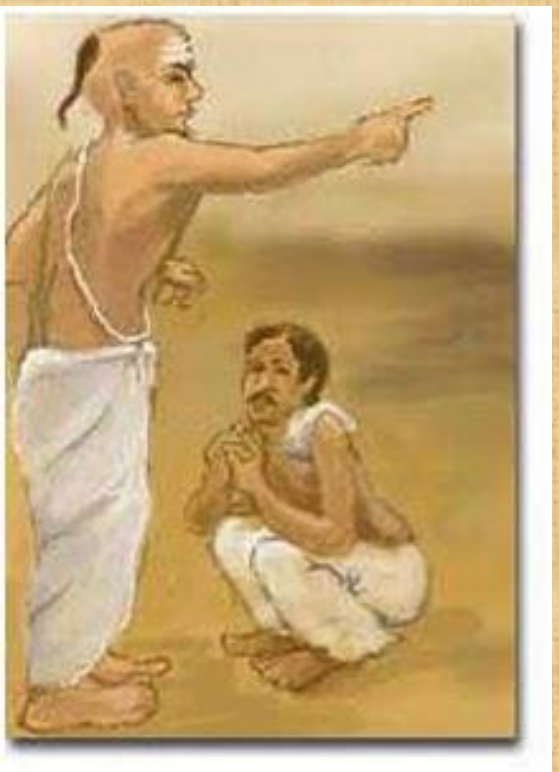

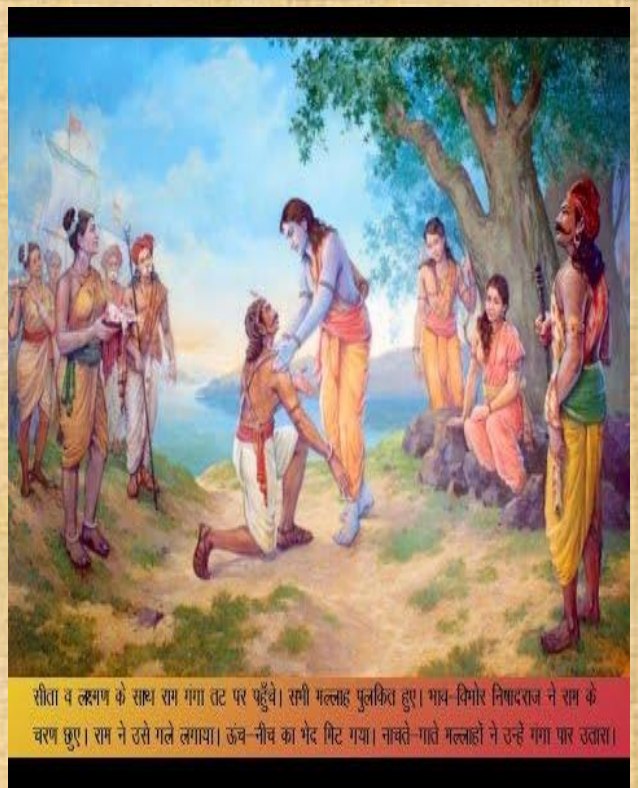

अन्य लोग समाज के भय से निम्न कुल के व्यक्ति के समीप जाने से भी डरते हैं परन्तु बिना किसी से डरे निम्न कुल में जन्मे व्यक्ति को समाज में सम्मान दिलाने का सामर्थ्य केवल ईश्वर में ही है|

नामदेव कबीरू तिलोचनु सधना सैनु तरै ।

उनकी दया से नामदेव, कबीर, त्रिलोचन, सधना तथा सैन जैसे भक्त कवि निम्न कुल में जन्म लेने के बाद भी तर गए।

संत नामदेव : **नामदेव** भारत के प्रसिद्ध संत थे। इनके समय में नाथ और महानुभाव पंथों का महाराष्ट्र में प्रचार था। वे जाति से छीपी अर्थात् कपडे पर छपाई का काम करने वाले थे

इनके जीवन परिचय के लिए निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें :
https://www.youtube.com/watch?v=scBGgvHX314

संत कबीर : सफल साधक, भक्त कवि, मतप्रवर्तक अथवा समाज सुधारक कबीर का नाम संत समुदाय में अग्रणी हैं| कबीर जाति से जुलाहे अर्थात् कपडा बुनने वाले थे|

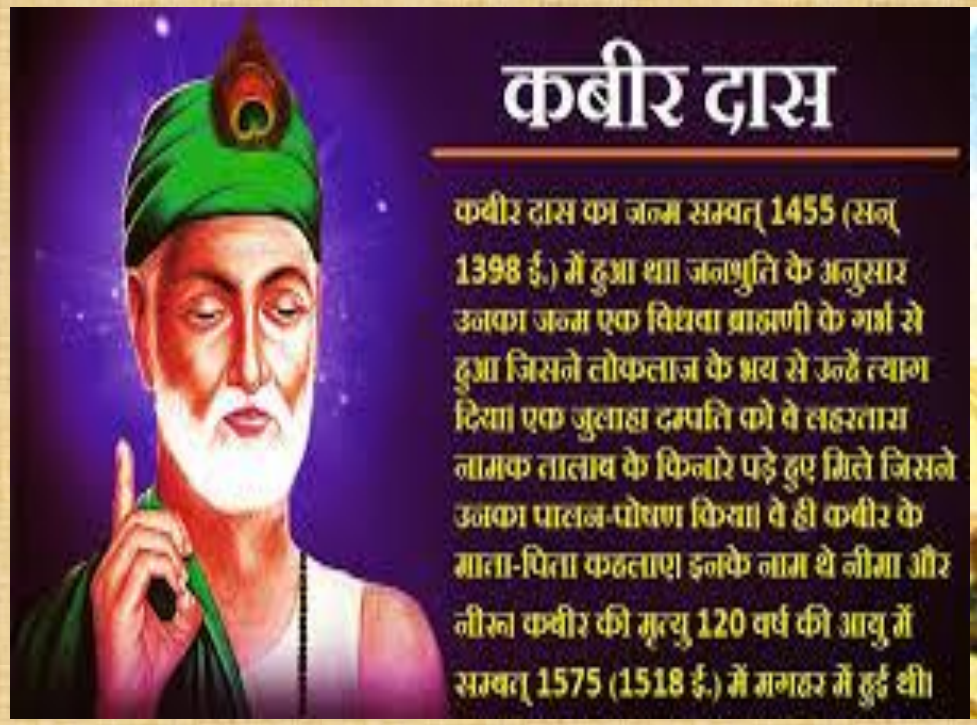

संत कबीर के जीवन पर आधारित चलचित्र के लिए निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें :

https://www.youtube.com/watch?v=RUDFis-tdg4

भक्त त्रिलोचन : श्री गुरू ग्रंथ साहिब जी में अपनी बाणी द्वारा हमेशा-हमेशा के लिए अमरता प्राप्त करने वाले भक्तों में भक्त त्रिलोचन आयु के काल अनुसार तीसरे स्थान पर आते हैं। जाति से वैश्य थे।

भक्त त्रिलोचन की सम्पूर्ण कथा जानने के लिए निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें :

https://www.youtube.com/watch?v=7LvKfZXjjWU

सधना : भक्त सधना जी के माँ-बाप का कुछ पता नही चलता। बचपन से ही संतों, फकीरों और महापुरूषों के पास बैठने और ज्ञान चर्चा सुनने की लग्न थी। उनका पेशा कसाई का था। आपको प्रभु के प्यारों का मिलाप परमात्मा की भक्ति की ओर ले गया

भक्त सधना जी के विषय में और अधिक जानने के लिए निम्नलिखित लिंक पर जाएँ :
https://www.youtube.com/watch?v=2KJQN0GaTHA

सैन : हजारों ही ऐसे भक्त हैं जिन्होंने परमात्मा का नाम जप कर भक्ति करके संसार में यश कमाया। ऐसे भक्तों में “सैन भगत जी” का भी नाम आता है। श्री सैन जी के जन्म व परिवार के विषय में कुछ विशेष जानकारी प्राप्त नहीं होती। परन्तु इतना अवश्य कहा जा सकता है कि वह जाति से नाई थे।

भक्त सैन जी की जीवन गाथा निम्न लिंक पर जाकर देखें :

https://www.youtube.com/watch?v=YG3jj6_rpVc

कठिन शब्दों के अर्थ

ऐसी (ऐसा महान कार्य) लाल (ईश्वर) तुझ बिनु (तुम्हारे अतिरिक्त) कउनु (कौन)करै (कर सकता है)।
गरीब निवाजु (गरीबों पर कृपा करने वाला) गुसाईआ (गोसाईं/ ईश्वर) मेरा माथै (माथे पर)छत्रु (छत्र : जैसा राजाओं के सर पर होता है) धरै (धारण करवा देता है) ॥
जाकी (जिसकी) छोति (छुआछूत) जगत (संसार) कउ (को) लागै (लगती है) ता पर (उन पर) तुहीं (तुम ही) ढरै (प्रेम प्रकट करते है)।
नीचउ (निम्न कुल में जन्म लेने वाले व्यक्ति को) ऊच (ऊँचा) करै (बना देता है) मेरा गोबिंदु (मेरा ईश्वर) काहू ते (किसी से भी) न डरै (नहीं डरता है)॥
नामदेव कबीरू तिलोचनु सधना सैनु तरै (तर गए/ मोक्ष प्राप्त कर लिया)।
कहि (कहते हैं) रविदासु (रैदास कवि) सुनहु रे (ध्यान पूर्वक सुनो)संतहु (संतो/ सज्जनों)हरिजीउ (भगवान) ते (से/ के लिए) सभै (सब कुछ) सरै (संभव है) ॥

प्रतिपाद्य

- प्रस्तुत पद में ईश्वर के कृपालु तथा समदर्शी स्वभाव का वर्णन करते हुए रैदास जी कहते हैं कि ईश्वर के बिना ऐसा कोई कृपालु है जो भक्त के लिए इतना बडा कार्य कर सकता है। वे गरीब तथा दीन-दुखियों पर दया करने वाले हो । प्रभु ही ऐसे कृपालु स्वामी हैं जो अपने निम्न कुल में जन्में भक्तों के माथे पर राजाओं जैसा छत्र रख देते हैं अर्थात सम्मान व गौरव दिलवाते हैं| सारा संसार जिन्हें अस्पृश्य (अछूत) मान कर उनके प्रति भेद-भाव पूर्ण व्यवहार करता है तुम उन पर अपना प्रेम उड़ेल देते हो| बिना किसी से डरे निम्न कुल में जन्मे व्यक्ति को समाज में सम्मान दिलाने का सामर्थ्य केवल ईश्वर में ही है| उनकी दया से नामदेव, कबीर, त्रिलोचन, सधना तथा सैन जैसे भक्त कवि निम्न कुल में जन्म लेने के बाद भी तर गए। रैदास कवि संत जनों को संबोधित करते हुए कहते हैं हरि जी सब कुछ करने में समर्थ हैं। उनके लिए कुछ भी असंभव नहीं|

काव्यगत सौन्दर्य

- **रैदास** ने अपनी काव्य-रचनाओं में सरल, व्यावहारिक ब्रजभाषा का प्रयोग किया है, जिसमें अवधी, राजस्थानी, खड़ी बोली और उर्दू-फ़ारसी के शब्दों का भी मिश्रण है।
- इनकी भक्ति में आत्मनिवेदन, दैन्य भाव व दास्य भाव और सहज भक्ति भाव है|
- रूपक अलंकार का सुन्दर प्रयोग किया गया है|
- अनेक उद्धरणदेते हुए कवि ने ईश्वर के प्रति अपनी अनन्य व एकनिष्ठ भक्ति भावना को प्रकट किया है|
- तुकांतता के कारण पद में गेयता का गुण विद्यमान है|

अधिन्यास

- रैदास के पद पाठ के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर अपनी उत्तर-पुस्तिका में लिखें-
- प्रश्न 1. दोनों पदों के प्रतिपाद्य लिखिए|
- प्रश्न 2.
- क) पहले पद में भगवान और भक्त की जिन-जिन चीज़ों से तुलना की गई है, उनका उल्लेख कीजिए।
- (ख) पहले पद की प्रत्येक पंक्ति के अंत में तुकांत शब्दों के प्रयोग से नाद-सौंदर्य आ गया है, जैसे: पानी, समानी आदि। इस पद में से अन्य तुकांत शब्द छाँटकर लिखिए।
- (ग) पहले पद में कुछ शब्द अर्थ की दृष्टि से परस्पर संबद्ध हैं। ऐसे शब्दों को छाँटकर लिखिए:
- उदाहरण: दीपक बाती
  ....
  ....
  ....
  ....
- (घ) दूसरे पद में कवि ने 'गरीब निवाजु' किसे कहा है? स्पष्ट कीजिए।
- (ङ) दूसरे पद की 'जाकी छोति जगत कउ लागै ता पर तुहीं ढरै' इस पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।
- (च) 'रैदास' ने अपने स्वामी को किन-किन नामों से पुकारा है?

धन्यवाद

द्वारा
शालिनी रस्तौगी
(टी.जी.टी. हिंदी)
डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल
सैक्टर -१४
गुरुग्राम